बाइबल टीचर

वर्ष 19 | नवम्बर 2022 | अंक 12

सम्पादकीय

यीशु की अपनी इच्छा नया नियम

मृत्यु से पहिले कई लोग अपनी इच्छा अपने लोगों को बताते हैं। कुछ लोग अपने परिजनों को अपनी इच्छा बताते हैं कि मरने के बाद किस को क्या देना है या किसे क्या करना है। प्रभु यीशु ने भी अपने लोगों को अपनी इच्छा बताई थी। जब उसकी मृत्यु हुई थी तब वह पुराने नियम में रहता था। आज यीशु की इच्छा हमारे पास नये नियम के रूप में है। परमेश्वर ने यहूदी लोगों को अपना पुराना नियम मूसा के द्वारा दिया था तथा नया नियम मसीहियों को यीशु के द्वारा दिया है। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने पुराने नियम को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया तथा साम्हने से हटा दिया (कुल. 2:14)। नये तथा पुराने नियम में काफी अन्तर है। आज इस मसीही युग में हमारे लिये नया नियम है जिसके अनुसार मसीही लोग चलते हैं। बाइबल हमें बताती है, ''इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची। (यूहन्ना 1:17)।

यीशु की इच्छा के विषय में हम देखते हैं यूहन्ना 13:34-35 में जहां यीशु ने कहा था, ''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।'' यीशु ने अपने लोगों की एकता के विषय में भी अपनी इच्छा को बताया था, और उसने उनके लिये प्रार्थना करके कहा था, ''मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक हो। जैसा तूने हे पिता मुझमें है, और मैं तुम में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतिति करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 17:20-21)। यीशु यह चाहता है कि उसमें विश्वास लाने वाले सब लोग एकता में होकर रहें, परन्तु हमें ऐसा देखने को नहीं मिलता। आज इस संसार में यीशु में विश्वास करने वालों के बहुत

सारे समुदाय तथा साम्प्रदाय है। सारा संसार विभिन्न प्रकार की कलसियाओं से भरा हुआ है। प्रत्येक विश्वासी का यह कर्त्तव्य है कि वह एकता की बात करे और मसीह की शिक्षा को मानकर मसीह से एक हो। (इफिसियों 4:1-6)।

यीशु ने अपनी इच्छा प्रकट करके यह कहा है कि लोग उसमें विश्वास लाकर बपतिस्मा लें। (मरकुस 16:16) यीशु की यह इच्छा है कि आज लोग उसकी अपनी बनाई हुई एक कलीसिया या मण्डली के सदस्य हों। यीशु ने अपनी एक कलीसिया की स्थाना की थी (मत्ती 16:18) और वह चाहता है जिस प्रकार से लोगों ने अपने पुराने जीवनर को छोड़कर बपतिस्मा लिया था आज लोग भी ऐसा ही करें (प्रेरितों 2:38)।

जब हम मसीह में बपतिस्मा लेकर कलीसिया के एक सदस्य बन जाते हैं तब हम एक नये जीवन में प्रवेश कर जाते हैं। (रोमियों 6:3-4, गलतियों 3:26-27 और 2 कुरि. 5:10)। आज प्रभु यीशु हमारे मनों पर राजा करता है क्योंकि वह कलीसियों का सिर है। (कुलु. 1:18)। उसके वचन के इच्छा की छाप हमारे मनों पर है। उसका वचन जो स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था है हमारे मनो में वास करती है। (याकूब 1:25) नया नियम उसकी इच्छा है जिसके अनुसार मसीही लोग चलते हैं। उसकी इच्छा तथा अज्ञाएं हमारे लिये हैं तथा उनको मानना कोई कठिन बात नहीं है। (1 यूहन्ना 5:2-5)।

पौलुस ने मसीहीयों से कहा था, ''सो अब जो यीशु मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं चलते वरन आत्मा के अनुसार चलते है। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पाप के बलिदान में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी (रोमियों 8:1-3)।

प्रभु यीशु ने अपना बलिदान देकर हमें पुरानी व्यवस्था या नियम से छुटकारा दिया। आज हम पुराने नियम से स्वतंत्र हैं। (प्रेरितों 15:10, 2 कुरि. 3:7-9 तथा गलतियों 5:1-3)।

आज यीशु का नया नियम हमें आज्ञा देता है कि हम सब यीशु के सुसमाचार को दूसरे लोगों तक ले जायें (मत्ती 28:18-19, मरकुस 16:15) हमें यीशु की इस आज्ञा को मानना है तथा दूसरों तक सुसमाचार को ले जाना है। आज हमारे पास सुसमाचार को ले जाने के विभिन्न साधन है। हम लोगों को यीशु के विषय में बतायें। इस बात के लिये प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमारी सहायता करें ताकि दूसरों तक सुसमाचार को ले जाया सके। वह अवश्य हमारी सहायता करेगा।

क्या आप यीशु की इच्छा को तथा उसकी आज्ञा को मनोंगे? क्या आप उसकी आज्ञा का पालन करेंगे। यदि आपने अभी तक सुसमाचार का पालन नहीं किया है तो इसके बारे में गंभीरता से विचार कीजिए। उसकी इच्छा है कि आप अपना मन

फिराकर बपतिस्मा ले। (लूका. 13:3, प्रेरितों, 2:38)। क्या ही मनोहर बात है कि हम उसकी आज्ञा मानकर उसकी इच्छा पर चलें। परमेश्वर आपको यह समझ दें कि आप इस बात को गम्भीरता से लें।

बाइबल की मूल शिक्षाएं

सनी डेविड

इस लेख में हम उन बातों पर विचार करेंगे जिनकी शिक्षा हमें बाइबल में मिलती है। और यह बड़ा ही आवश्यक है कि हर एक इंसान उन बातों से परिचित हो जिनका वर्णन बाइबल में मिलता है। क्योंकि बाइबल एक ऐसी पुस्तक है जिसके द्वारा परमेश्वर मनुष्य से बात करता है। और प्रत्येक मनुष्य को यह जानने की जरूरत है कि परमेश्वर उस से क्या चाहता है। बाइबल में परमेश्वर की बातें है; और उसका वचन है। हम अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह से समझते हैं, अर्थात् यह, कि हमने परमेश्वर के वचन को सुना है, और उसे जाना है, और उसे माना है; और अब यह जरूरी है कि हम अन्य सभी लोगों को भी उसके बारे में बताएं। यह जरूरी नहीं है कि हर एक इंसान जो परमेश्वर के वचन को सुनेगा, वह उस पर अवश्य ही विश्वास करेगा और उसे मानेगा। पर यह जरूरी है, कि हम उसके बारे में सब को बताएं। और इसलिए एक बार फिर से परमेश्वर के वचन की बातों को लेकर मैं आपके पास आया हूँ।

बाइबल में सबसे पहले हम परमेश्वर के बारे में पढ़ते हैं। वह परमेश्वर, जिसने सारे जगत को, और जो कुछ भी संसार में है, और आकाश में है, उस सब को बनाया है। और उसी परमेश्वर ने इंसान को भी बनाया है। मनुष्य को, बाइबल कहती है, परमेश्वर ने अपनी समानता और अपने स्वरूप पर बनाया था। अर्थात् आरम्भ में जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था, तो वह परमेश्वर के ही समान पवित्र था। और मनुष्य परमेश्वर के ही समान एक आत्मिक प्राणी है। और क्योंकि आत्मा सदा वर्तमान रहती हैं, इसलिये मनुष्य आत्मिक रूप से हमेशा वर्तमान रहेगा।

परमेश्वर केवल एक है, लेकिन उसी परमेश्वरत्व में परमेश्वर का वचन और परमेश्वर का आत्मा भी शामिल है। इसलिये बाइबल में परमेश्वर के वचन को भी परमेश्वर कहा गया है और परमेश्वर के पवित्रात्मा को भी परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया है। जिस प्रकार से मनुष्य के दो व्यक्तित्व है, अर्थात् एक बाहरी और एक अन्दरूनी; यानि एक शारीरिक और दूसरा आत्मिक। ऐसे ही परमेश्वर को भी बाइबल में तीन अलग-अलग व्यक्तित्व में प्रस्तुत किया गया है। यीशु मसीह जो बाइबल का मुख्य विषय है, वास्तव में सदा ही वचन के रूप में परमेश्वर के साथ विद्यमान था। किन्तु, मनुष्य को पाप से मुक्ति देने के लिये और

उसे स्वर्ग में रहने के योग्य बनाने के लिये, वह स्वर्ग को छोड़कर एक मनुष्य के रूप में जमीन पर आ गया था। और यही कारण है कि क्यों बाइबल में यीशु मसीह को अकसर परमेश्वर का एकलौता पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है। क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा से, और उसकी सामर्थ से और उसी की मर्जी को पूरा करने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था।

और यदि पाप जगत में नहीं होता तो परमेश्वर को यीशु मसीह के रूप में पृथ्वी पर आने की कोई आवश्यकता नहीं होती। पर पाप क्या है? बाइबल के अनुसार, पाप का अर्थ है परमेश्वर के ठहराए नियमों, अर्थात् उसकी व्यवस्था का उल्लंघन करना। और पृथ्वी पर कोई ऐसा इंसान नहीं है, और न कभी कोई ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसने कभी कोई पाप न किया हो। बाइबल में हम बहुत से नेक और धर्मी लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जैसे कि नूह, इब्राहिम, मूसा और दाऊद, पर परमेश्वर के लेखे में उन सबने भी पाप किया था। और जैसे पापों की क्षमा पाने की आवश्यकता आज हमें हैं, ऐसे ही उन्हें भी थी। इसलिये, जब परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह मानवता के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मारा गया था, तो वह एक ही बार सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया गया था। यानि वह उन सब के पापों का प्रायश्चित करने को भी मारा गया था जो आदम से लेकर मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय तक हुए थे। और ऐसे ही, उन सब के लिये भी जो जगत के अन्त तक पृथ्वी पर होंगे।

पर अब, कदाचित आप कहें, कि आज तो, बाइबल के अनुसार, हम अपने पापों से मुक्ति या उद्धार तब पाते हैं, जब हम मसीह में विश्वास लाकर अपने पापों से मन फिराते हैं और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेते हैं, जैसा कि बाइबल में मरकुस 16:16 में और प्रेरितों 2:38 में लिखा हुआ है। पर जो लोग मसीह को जानते तक भी नहीं थे, तो फिर उनका उद्धार मसीह के क्रूस पर मारे जाने के द्वारा कैसे होगा? बाइबल इस बात को यह कहकर समझाती है, कि वास्तव में जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये मसीह का बलिदान परमेश्वर के लेखे में, उसके होनहार के ज्ञान के अनुसार, जगत की उत्पत्ति से भी पहले हो चुका था, पर हमारे लिये इस अंतिम युग में वह अब प्रकट हुआ है (1 पतरस 1:18-20; प्रकाशित 13:18)। अर्थात् परमेश्वर के मन में, उसकी योजना में, यह काम मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही पूरा हो चुका था। क्योंकि परमेश्वर वह है जो भूत, वर्तमान और भविष्य सब कालों का ज्ञान रखता है। सो जब परमेश्वर की मनसा से उसका पुत्र मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था तो उसे सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित परमेश्वर ने ठहराया था। सो जिन लोगों ने जिस किसी भी काल में रहकर परमेश्वर की इच्छानुसार चलकर, अर्थात् उसकी आज्ञाओं को मानकर अपना जीवन व्यतीत किया हो, वे परमेश्वर की आज्ञा मानने के कारण, मसीह के बलिदान के फलस्वरूप, अपने पापों की क्षमा प्राप्त करेंगे। जैसे कि हम नूह के बारे में बाइबल में पढ़ते हैं, कि उसने परमेश्वर की

आज्ञा मानकर एक जहाज बनाया था; और इब्राहिम के बारे में पढ़ते हैं, कि वो परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपना देश छोड़कर परमेश्वर के मार्ग पर चल पड़ा था– उन्होंने मसीह में विश्वास लाकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा नहीं लिया था, क्योंकि वे तो यीशु मसीह को जानते तक भी नहीं थे क्योंकि वे सब मसीह से सैंकड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी पर हुए थे। पर क्योंकि उन लोगों ने अपने जीवनों में परमेश्वर की आज्ञाओं को माना था; इसलिये वे परमेश्वर की आज्ञा मानने के कारण मसीह के बलिदान के द्वारा उद्धार पाएंगे। ऐसे ही, आज हम भी, जब हम परमेश्वर की उन आज्ञाओं को मानते हैं जिन्हें हमारे लिये बाइबल के नए नियम में रखा गया है, तो हम जानते हैं कि परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर, मसीह के क्रूस पर बलिदान के द्वारा, हम अपने पापों से मुक्त पाएंगे।

बाइबल में लिखा है, कि प्रत्येक मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यह है, कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करे। परमेश्वर केवल एक है। और सारी मानवता के लिये उसकी एक ही इच्छा है, जिसे उसने अपने वचन की पुस्तक बाइबल में सब लोगों के लिये प्रकट किया है। बाइबल को हमें ऐसे नहीं समझना चाहिए कि वह किसी एक विशेष धर्म के लोगों की पुस्तक है। पर बाइबल वास्तव में सब लोगों के लिये परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। उसके लिये हम सब बराबर है। वह हम सबको अपनी आशीषें देता है। उसका सूरज सबके लिये चमकता है। उसकी बारिश सब के लिये होती है। और उसका अनाज सबके लिये है। ऐसे ही उसकी आत्मिक आशीषें भी हैं। उसका एकलौता पुत्र यीशु मसीह, उसके अनुग्रह से सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर लटकाया गया था। और उसने सब लोगों के लिये यह निर्धारित किया है, कि अपने पापों से मुक्ति पाने के लिये हर एक व्यक्ति उसके पुत्र यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाए; और अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये जल में गाड़े जाकर उसकी आज्ञा अनुसार बपतिस्मा ले। (प्रेरितों 2:38; 8:35-39)।

बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा हुआ है, ''क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो. .. वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लेकर क्रूस पर चढ़ गया, ताकि हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।'' (1 पतरस 2:21 तथा 24)।

सो मसीह न केवल हमारे पापों का प्रायश्चित ही है, पर वह हमारे जीवनों के लिये हमारा आदर्श भी है। न केवल वह पाप से मुक्त करके हमें धर्मी ही ठहराता है, पर हमें धर्मी बनाए रखने के लिये वह अपने आदर्शों के द्वारा प्रतिदिन हमारी अगुवाई भी करता है।

सो परमेश्वर ने हमारी मुक्ति के लिये कुछ भी बाकी नहीं रख छोड़ा है। अब यह हमारे हाथ में है कि हम अपनी आत्मा को स्वर्ग के लिये बचाना चाहते हैं, या

उसे नरक में खोना चाहते है। निश्चय ही, हमारा उद्धार केवल परमेश्वर ही करेगा। किन्तु, परमेश्वर हमारा उद्धार केवल तभी करेगा जब हम उसकी बात पर विश्वास करके उसकी हर एक बात को मानेंगे।

कलीसिया का आगमन

जे. सी. चोट

कलीसिया के बनने में थोड़ा-सा समय नहीं लगा। इसके लिये योजना बनाई गई, भविष्द्धाणियां की गई, प्रतिज्ञा की गई, और तब यह बनी। बाइबल स्पष्टता से यह सब बतलाती है।

पहले, कलीसिया परमेश्वर के मनोभाव में थी। यह बात पौलुस ने मसीहियों को इफिसुस में बतलाई। उसने कहा, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र, और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया।" (इफिसियों 1:3-6)। ध्यान दें कि वह इफिसुस में कलीसिया से बात कर रहा है, और उसने कहा कि परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले उन्हें चुन लिया था। इसका अर्थ यह हुआ कि संसार के बनाए जाने से पहले ही से परमेश्वर कलीसिया के विषय में विचार कर रहा था। अर्थात् उस समय वह इसकी योजना बना रहा था, और इसलिये इसका आरंभ परमेश्वर के मन में हुआ। अब, जिसकी योजना परमेश्वर ने आरंभ में अर्थात् जगत की उत्पत्ति से भी पहले बनाई तो उसे छोटा या कम मूल्यवान समझना कितना निरर्थक व मूर्खता होगा।

दूसरे, कलीसिया के लिये बहुतेरी भविष्यद्वाणियां की गईं। यशायाह ने कहा, "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाई उसकी ओर चलेंगे। और बहुत देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चलकर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे, क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।" (यशायाह 2:2, 3)। योएल ने वर्णन किया, "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंडेलूंगा; तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये

स्वप्न देखेंगे; और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा।" (योएल 2:28, 29) तब दानिय्येल ने बतलाया, "और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा।" (दानिय्येल 2:44)। आइये, अब इसका निष्कर्ष निकालें :

1. राज्य की स्थापना अंत के दिनों में होगी।
2. वह पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा।
3. हर जाति के लोग उसमें जाएंगे।
4. प्रभु अपना आत्मा सब प्राणियों पर उंडेलेगा।
5. इसकी स्थापना संसार के चौथे साम्राज्य के दिनों में होगी।
6. यह अन्य सब राज्यों को चूर-चूर करेगा व उनका अंत करेगा और स्वयं सदा स्थिर रहेगा।

अब, यह सब कहां पूरा हुआ? पढ़िये प्रेरितों के काम 2 अध्याय।

तीसरे, कलीसिया के लिये प्रतिज्ञा की गई। यूहन्ना ने कहा कि वह निकट है (मत्ती 3:2)। अर्थात् वह पास है या उसकी स्थापना शीघ्र ही होने वाली है। यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी, "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)। "और उसने उनसे कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे। (मरकुस 9:1)। "और उनसे कहा, यों लिखा है; कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" (लूका 24:46-49)।

अब ध्यान से देखें:

1. राज्य निकट था।
2. यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी, कि वह अपनी मृत्यु के बाद इसे बनाएगा।
3. वे जो उस समय यीशु मसीह के साथ थे, उनमें से कुछ ऐसे होंगे जो उस समय तक जीवित रहेंगे जब तक उसे अर्थात् राज्य को आया हुआ न देख लें।
4. वह सामर्थ के साथ आएगा।
5. मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से सब जातियों में किया जाएगा।

6. इसका आरंभ यरूशलेम में होगा।

7. प्रेरितों को स्वर्ग से सामर्थ यरूशलेम में प्राप्त होगी।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर कलीसिया के बनाए जाने के विषय में विवरण का अध्ययन करें, ऐसा करने से आपके लिये यह सब स्पष्ट हो जाएगा।

अब प्रेरितों के काम 2 अध्याय को देखें। इसे ध्यान पूर्वक पढ़ें। बाइबल के सब विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि कलीसिया की स्थापना इसी समय हुई थी। इसके अतिरिक्त, इसकी स्थापना का स्थान यरूशलेम था, इसकी स्थापना अन्त के दिनों में हुई, व रोमी साम्राज्य के दिनों में हुई, सामर्थ आई, मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार सब जातियों में किया गया, और तभी से कलीसिया वर्तमान है। तदनुसार, जो कलीसिया परमेश्वर के विचार में थी वह स्थापित हो गई, इसके विषय में जो भविष्यद्वाणियां हुई थीं वे पूर्ण हो गई, और प्रतिज्ञाओं के अनुसार इसकी स्थापना हुई।

बिना शर्त प्रेम की सीमाएँ

डेविड डब्ल्यू. चैड्वेल

परमेश्वर के मनुष्यों के साथ अपने बिना शर्त प्रेम की वास्तविकता शायद सबसे जटिल है। जब आदम और हव्वा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में नाकाम रहे तब भी उसे उन से प्रेम था (उत्पत्ति 3)। जब नूह के समय के संसार के लोग इतने दुष्ट हो गए थे कि उनके मन के विचार में जो कुछ भी आता वह बुरा ही होता था, तब भी परमेश्वर उनसे प्रेम करता था (उत्पत्ति 6:5)। उसका प्रेम जंगल में इस्राएलियों की क्षमा न की जाने वाली गलतियों के दौरान, न्यायियों के काल में उनकी अविश्वसनीय बुराई में, विभाजित राष्ट्र के काल काल में उनकी मूर्तिपूजा में और उनकी दुष्टता में भी बना रहा जिसके कारण उन्हें अश्शूर और बाबुल की दासताओं में जाना पड़ा था।

परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम अकेले इस्राएल के लिए नहीं था। योना को यह जानकर बड़ा अफसोस था कि पमरेश्वर क्रूर, मूर्तिपूजक अश्शूरियों से प्रेम करता था। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के रूप में इस्राएल को चुना जाना कभी भी इस बात का सबूत नहीं था कि वह अन्य लोगों से प्रेम नहीं करता था। वास्तव में परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने लोग होने के लिए इसलिए चुना क्योंकि वह सारी मनुष्यजाति से प्रेम करता था। इस्राएलियों ने प्रतिक्रियाशील अर्थात् चौकस लोग होना था। जिनके माध्यम से उसने संसार के लिए उद्धारकर्त्ता को लाना था।

सुसमाचार का यूहन्ना का विवरण परमेश्वर के अपने एक भाग अर्थात् अपने पुत्र को मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर भेजने के लिए यीशु की बात बताते हुए कहता हैं, ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे

दिया'' (यूहन्ना 3:16)।

यह एक सच्चाई है कि परमेश्वर सब लोगों से प्रेम करता है। वे दुष्ट हों या धर्मी सबसे। हर संस्कृति के लोगों से, हर पृष्ठभूमि के लोगों से। कोई भी इतना छोटा, इतना महत्वहीन, इतना खोट से भरा, इतना पाप से भरा, इतना निर्बल, इतना खराब, इतना परेशान, इतना व्याकुल, या इतना कुछ भी नहीं होता कि उसे परमेश्वर के प्रेम से अलग किया जा सके।

क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने के बाद सब लोगों के लिए परमेश्वर के शर्तरहित प्रेम का संदेश क्या है? वह संदेश यह है कि परमेश्वर किसी की भी बुराई या दुष्टता से इतना नाराज नहीं होता कि वह उसे जोमन फिराकर उसमें विश्वास लाता और अपना जीवन उसे दे देता है, क्षमा न कर सके। वह सभी उड़ाऊ पुत्रों का जो अपने आपे में आकर घर लौटने के इच्छुक हों, प्रेमी और आनन्दित पिता है। परमेश्वर के सामने क्षमा करने में बहुत देर हो चुकी, बहुत बुरा व्यक्ति या बहुत भयानक पाप जैसी कोई बात नहीं होती। वह किसी भी व्यक्ति के लिए, जो क्रूस पर चढ़ाए उसके प्रायश्चित को स्वीकार करता है, नये सिरे से आरंभ करने वाला परमेश्वर है। वह पूर्ण क्षमा, पूरी तरह से सच्चा और पूर्णतया पवित्र परमेश्वर है जो बिना किसी दबाब या बिना किसी खूबी के पश्चाताप करने वाले व्यक्ति से प्रेम करता है।

परमेश्वर के बिना शर्त प्रेम का संदेश क्या है? क्या केवल होने से परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम किसी की जवाबदाही और जिम्मेदारी को खत्म कर देता है? बिना शर्त प्रेम है, तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि कोई अपने पापों और विद्रोहों को नजरअंदाज कर दे?

पमरेश्वर का बिना शर्त प्रेम जवाबदेही, जिम्मेदारी या अपश्चातापी व्यक्ति के पापों को नष्ट नहीं कर देता है। वास्तव में परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम अपश्चातापी व्यक्ति जो विशेष रूप से सहायता नहीं करता है। वह प्रेम मसीह के पास लौट आने वाले पश्चातापी व्यक्ति के लिए क्षमा, करूणा और अनुग्रह के लिए अवसर का वह द्वार है जिसे बंद नहीं किया जा सकता। उस प्रेम के बावजूद, उस व्यक्ति की जवाबदेही जो यीशु में परमेश्वर के बलिदान को न मानकर मन फिराने से इंकार कर देता है, बदल नहीं जाती है। परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम मसीह में आने वाले पश्चातापी व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा उपहार है। उस व्यक्ति के लिए जो मसीह का इंकार करता है पहुंच से सदा के लिए बाहर उपहार है।

कोरह का विद्रोह

जैरिल (पोली) क्लाइन

मूसा का पिता अग्राम और कोरह का पिता यिसहार दोनों भाई थे (निर्गमन

6:18-21)। इस प्रकार से कोरह और मूसा चाहे-ताये के बेटे, भाई थे। उनका दादा कहात लेवी का पुत्र था।

जिस दिन परमेश्वर ने मिस्र के सब पहलौठों को मारा था, उसी दिन से उसने इस्राएल के सब पहलौठों को अपने लिए पवित्र ठहरा दिया था। परन्तु इस्राएल के पहलौठों की जगह, परमेश्वर ने अपने सामने खड़े होने के लिए लेवियों के गोत्र को चुना था। लेवी परमेश्वर के थे। वे मेरे ही ठहरेंगे; मैं यहोवा हूं (गिनती 3:12, 13)।

लेवी के गोत्र को हारून याजक के पास लाकर उसके सामने रखा गया था कि मिलाप वाले तम्बू की सेवा करने के लिए तम्बू के सामने पूरी मण्डली के साथ-साथ उसके लिए सेवा करते ड्यूटी दें (गिनती 3:6, 7)।

लेवियों को साक्षी के तम्बू पर नियुक्त किया गया था। उनका काम उसके कुल सामान की देखभाल करना था। उसे खड़ा करने और उसे गिराने तक उससे जुड़ी सब बातों का ध्यान रखना उन्हीं का जिम्मा था। उन्होंने इसके आस-पास डेरा डालना था ताकि इस्राएलियों की मण्डली पर कोई क्रोध न आ पड़े, साधारण जन इसके समीप नहीं जा सकते थे (गिनती 1:50-53)।

मूसा और कोरह दोनों कहाती थे, इस कारण वे दोनों मन्दिर के दक्षिणी ओर एक ही जगह पर रहते थे (गिनती 3:29)।

कोरह की जिम्मेदारी कुछ सबसे पवित्र काम करने की थी। कहातियों को संदूक, मेज, दीवट, वेदियां और मन्दिर के बर्तनों का जिम्मा दिया गया था (गिनती 3:17, 19, 27-32)।

परन्तु मूसा और हारून तथा पुत्रों को तम्बू के काम करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी (गिनती 3:38)। पवित्र वस्तुओं को केवल वे और केवल वही छू सकते थे। उनके द्वारा मन्दिर की पवित्र वस्तुओं को ढांप लेने का काम पूरा कर लिए जाने के बाद ही, कहात के पुत्र (कोरह उन्हीं में से था) उन्हें उनकी नई जगह पर ले जाने के लिए आगे आ सकते थे (गिनती 4:15)।

परमेश्वर ने चाहे लेवियों को, जिसमें कोरह भी शामिल था, अपनी महिमा करने के लिए उन्हें एक काम दिया था, पर यह काफी नहीं था (गिनती 16:9)। कोरह और मण्डली के 250 अगुओं के लिए जिन्हें सभा में चुना गया था, नामी लोगों को यह काफी नहीं लगा।

विद्रोह के उसके शब्दों को सुनें। अपने आप से पूछें कि आपको ये शब्द कहीं सुने सुने से तो नहीं लगते हैं। उन स्त्रियों के मुंह से जो अलग भूमिका चाहती है, पुरुषों के मुंह से जो ऐल्डरों के अधिकार को नकारते हैं... उनके मुंह से जो अपनी प्रतिभा को दिखाना चाहते हैं, उनके मुंह से जिनके अधिक प्रगतिशील विचार है, तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिये तुम यहोवा की मण्डली में ऊंचे पद वाले क्यों बन बैठे हो? (गिनती 16:3)।

पृथ्वी का सबसे विनम्र व्यक्ति भूमि पर गिरकर परमेश्वर से विनती करने लगा।

कि.... यहोवा दिखला देगा कि उसका कौन है, औरपवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपने समीप बुला भी लेगा (गिनती 16:5)।

हम केवल प्रभु के सामने ही विनती कर सकते हैं। वही, और केवल वही जानता है कि वह क्या चाहता है और उसे क्या पसंद है। अपने निकट वह केवल उन्हीं लोगों को ला सकता है जो उसके तरीके से काम करने को तैयार हों। क्योंकि उसके निकट हमें उसकी इच्छा ही लाती है। बिना उस इच्छा के, हम दूर चले जाते हैं, उससे दूर, दूर जो उसे भाता है, उस तूफानी समुद्र के बीच में जो हमें अच्छा लगता है।

यह विडम्बना ही है कि अध्याय 15 इस्राएलियों के वस्त्रों के छोर पर झालर लगाए जाने सम्बंधी निर्देशों के साथ खत्म होता है। उन्हें यहोवा की उन सब आज्ञाओं को याद दिलाने के लिए ये निर्देश दिए गए थे ताकि तुम अपने अपने मन और अपनी अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो (आयत 39)।

किसी बात को जो परमेश्वर चाहता है इसीलिए नजरअंदाज करना ताकि क्योंकि हमें कुछ और पसंद है, उसके परम पवित्र नाम की निंदा करना (अपने पांव झाड़ देना) है। यह उसके बिल्कुल विपरीत है जिसकी इच्छा होने का हम दावा करते हैं।

क्या इसमें कोई हैरानी की बात है कि यहूदा 11 में परमेश्वर आज भी कोरह के विद्रोह को याद दिलाता है?

कोरह का प्रभाव बहुत अधिक था। उसके साथ परमेश्वर के डेरे के कुछ बेहतरीन अगुवे मूसा के विरूद्ध खड़े हो गए थे और उनके कारण परमेश्वर के लोग तम्बू के उसी द्वार पर मूसा के विरूद्ध खड़े होने के लिए आ गए थे (गिनती 16:19)।

परमेश्वर के साथ चाहे एक-दो ही क्यों न हों, वह अपनी इच्छा पर अडिंग रहता है।

कोरह और दो अन्य अगुवे, दातान और अबीराम, यहोवा के सामने मर गए थे। फिर भी उनके पुत्र नहीं मरे थे (गिनती 26:11)। यहोवा की ओर से आग आई जिससे 250 नामी लोग भस्म हो गए (गिनती 16:31-35)।

लोगों ने उन अच्छे लोगों की मृत्यु के लिए मूसा और हारून पर गलत दोष लगाया (आयत 41), इस कारण परमेश्वर ने पूरी मण्डली को मार डालना चाहा। यही हुआ, कोरह वाली घटना में मरने वालों के अलावा, केवल 14,700 लोग और मरे (आयत 49)। (यह मण्डली हमारी आज की सबसे बड़ी मण्डलियों से कई गुणा बड़ी थी। आकर, किसी के किए जाने वाले कामों को कभी सही नहीं ठहरा देता)।

आपकी मण्डली का क्या हाल है? प्रभु जानता है कि उसके लोग कौन हैं। यही लोग हैं जिन्हें वह अपने समीप ला सकता है क्योंकि वे उसकी इच्छा पर चलते हैं।

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

धार्मिक फूट और विभाजन का एक मूल कारण आज यह है, कि लोग इस बात पर सहमत नहीं है कि धार्मिक बातों में अधिकार किसका है, या किसके अधिकार से हमें धार्मिक बातों को मानना चाहिए। आपने सुना होगा, कि कहा जाता है कि, यह अधिकार चर्च अर्थात् कलीसिया के पास है। तौभी पतरस, मसीहीयों को सम्बोधित करके, 1 पतरस 2:5 में कहता है कि, तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते जाते हो। यहां मसीही लोगों को, स्त्रियों, पुरूषों को, परमेश्वर का आत्मिक घर अर्थात् उसकी कलीसिया कहा गया है। क्या मनुष्य जो कभी भी गलती कर सकता है, धार्मिक अधिकार के योग्य हो सकता है? फिर, आपने यह भी सुना होगा कि कहा जाता है, कि रीति-रिवाजों को मानना ही ध ार्मिकता है। पर यीशु ने मत्ती 15:6 में कहा था कि तुम ने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया। लोग आज बड़ा दिन और ईस्टर मानते हैं, इसका अधिकार परमेश्वर ने नहीं दिया है, पर मनुष्यों ने इन बातों को बनाया और सिखाया है। फिर भी कहा जाता है कि कुछ लोग जो विद्वान हैं वे अपनी सभाओं या कौंसिल में चर्च (कलीसिया) के नियमों को बनाते हैं और बदलते हैं और यह अधिकार उनके पास है। पर मत्ती 15:8 में यीशु ने यूं कहा था, कि ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। ऐसे ही कुछ लोगों का विचार है, कि जैसा जिसको अच्छा लगता है या जैसा भी विश्वास किसी का है वैसा ही वह चले और यही ठीक है। पौलुस भी एक मसीही बनने से पहले ऐसा ही सोचता था। पर एक मसीही बनने के बाद उसने प्रेरितों 26:9 में यूं कहा था, मैं ने समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए। किसी बात पर विश्वास करके उसे सही समझ बैठना उचित नहीं है। बहुतेरे लोग सोचते हैं कि यदि ईमानदारी और विश्वास के साथ वे किसी धर्म में हैं या किसी कलीसिया में है, और कुछ धार्मिक बातों पर विश्वास करते हैं और उन्हें मानते हैं तो यही ठीक है। पर यह उनकी अपनी दृष्टि में ठीक हो सकता है, परमेश्वर की दृष्टि में यह गलत है।

धार्मिक बातों में सारा अधिकार आज केवल प्रभु यीशु मसीह के ही पास है। मत्ती 28:18 में प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधि कार मुझे दिया गया है। मत्ती 17:5 में पमरेश्वर ने यीशु के बारे में कहा था, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं, इस की सुनो। पौलुस ने इफिसियों 1:22, 23 में कहा था कि परमेश्वर ने, सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसकी परिपूर्णता है जो सब कुछ पूर्ण करता है। और फिर, कुलुस्सियों 1:18 में वह कहता है, और वही देह अर्थात कलीसिया का सिर हैं अपनी इच्छा और वचन को

यीशु ने हम सब के लिये आज अपने उन प्रेरितों और चेलों के द्वारा प्रकट किया है। जिन्हें उसने चुना था, जिन्होंने उसके नए नियम में उसकी पूरी इच्छा को लिखकर हमें दिया है। यीशु ने अपने उन चेलों के विषय में कहा था, मत्ती 10:40 में कि जो तुम्हें ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है। सो प्रेरितों द्वारा लिखी बातें, जिन्हें आज हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं, वास्तव में मसीह के अधिकार से लिखी गई बातें हैं। सो धार्मिक विषयों पर केवल परमेश्वर के वचन को ही हमें एकमात्र अधि कार मानना चाहिए। और यदि लोग आज वास्तव में ऐसा ही करेंगे तो आज भी वही मसीहीयत इस पृथ्वी पर कायम हो सकती है जैसे कि पहली सदी में थी-असम्प्रदायिक सच्ची और प्रेरितों के समय की मसीहीयत।

आपने कुछ लोगों को यह कहते भी सुना होगा कि हमें आज भी पुराने नियम की उन दस आज्ञाओं को मानना चाहिए। पुराना नियम, अनेक साम्प्रदायिक कलीसियाओं के मतानुसार, आज भी हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा है। तौभी इब्रानियों 7:12 से हमें यह शिक्षा मिलती है, 'क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता तो व्यवस्था का भी बदलाव अवश्य है। सो यदि मसीह आज हमारा महायाजक है जैसे कि बाइबल शिक्षा देती है, तो मूसा की व्यवस्था की बातें हम पर आज लागू नहीं हो सकती। कुछ लोगों का कहना है, कि मूसा की व्यवस्था के संस्कार, जैसे बलिदान चढ़ाना और धूप इत्यादि जलाना तो आज समाप्त हो गए हैं पर उसमें लिखी अन्य आज्ञाएं आज भी हमारे ऊपर लागू होती हैं। परन्तु बाइबल में इस प्रकार की कोई बात हमें नहीं मिलती जहां व्यवस्था में लिखी बातों को दो भागों में बांटा गया हो। लूका 2:21-24 में जहां शुद्ध होने की बलि चढ़ाने का वर्णन मिलता है व्यवस्था को परमेश्वर की व्यवस्था तथा मूसा की व्यवस्था कहकर सम्बोधित किया गया है। रोमियों 7:4 में लेखक ने कहा था, सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए।' गलतियों 2:21 में पौलुस ने कहा था, मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता। गलतियों 3:24 के अनुसार व्यवस्था एक शिक्षक की तरह थी जिसका काम लोगों को मसीह के पास एक लाना था, और अब मसीह के आने के बाद, व्यवस्था की आवश्यकता लोगों को नहीं रही। अब हम यीशु के आधीन हैं। (यूहन्ना 12:48)। अब हम मूसा की व्यवस्था की आधीनता में नहीं है। अब हम मसीह की व्यवस्था अर्थात उसके नए नियम की शिक्षाओं के आधीन है। (गलतियों 6:2) व्यवस्थाविवरण 5:3 में लिखे इन शब्दों को याद रखिए, जहां लेखक ने यहूदियों को स्मरण कराके कहा था कि, इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं हम ही से बांधा जो यहां आज के दिन जीवित हैं। पुरानी व्यवस्था या वाचा को परमेश्वर ने उन यहूदियों के लिये दिया था जिनसे उस समय मूसा बातें कर रहा था। जिस प्रकार दो व्यक्तियों के बीच में की गई प्रतिज्ञा उन्हीं दो व्यक्तियों पर लागू होती है अर्थात अन्य लोग उसमें

शामिल नहीं होते, वैसे ही उस वाचा में हम भागीदार नहीं हो सकते जिसे परमेश्वर ने उस समय उन यहूदियों के साथ बांधा था जिन्हें वह मिश्र देश के दासत्व से निकालकर लाया था। रोमियों 2:16 के अनुसार पौलुस ने कहा था, जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा। सो हमारा न्याय पुराने नियम में लिखी बातों से या दस आज्ञाओं से नहीं होगा, पर मसीह के सुसमाचार के अनुसार होगा।

इसका क्या अर्थ है कि बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी?

बैटी बर्टन चोट

तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर रहें। (1 तीमुथियुस 2:15)।

जब भी हम बाइबल में इस आयत को पढ़ते हैं तो हमारा ध्यान खुद-ब-खुद उत्पत्ति की पुस्तक के अध्याय 3 में वर्णित अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के किए पाप की ओर चला जाता है।

बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी अभिव्यक्ति के अर्थ को आप कैसे समझाएंगे? बच्चे जनने की प्रतिज्ञा में विश्वास, प्रेम, पवित्रता और संयम कैसे आएंगे?

हव्वा के किए के कारण परमेश्वर ने जब उसे श्राप देते हुए कहा था कि वह स्त्री के जनने की पीड़ा को बहुत बढ़ाएगा और पीड़ा के साथ ही वह बच्चे जनेगी, तो उसने यह भी कहा था कि वह स्त्री और सर्प के बीच, यानी सर्प की संतान और स्त्री की संतान में वैर डालेगा। वह तेरे (यानी सांप के) सिर को कुचल डालेगा, और तू उस (यानी स्त्री की संतान) की एड़ी को डंसेगा। (उत्पत्ति 3:15)। इसे आने वाले उद्धारकर्त्ता, जिसने स्त्री से जन्म लेना था, कि पहली भविष्यवाणी माना जाता है।

इस प्रकार, जिस स्त्री के आज्ञा तोड़ने के कारण पाप और मृत्यु संसार में आए थे, उसी के द्वारा पाप का उपचार कुंवारी मरियम की कोख से यीशु मसीह के जन्म के द्वारा होना था। इस प्रकार बच्चे जनना मनुष्य जाति के आज्ञा मानने के लिए उद्धार का मार्ग बन जाना था। परन्तु इसके साथ ही बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाने के दो और अर्थ हैं, कि यदि वे परमेश्वर की विश्वासयोग्य बनी रहें।

परमेश्वर ने आदम अर्थात् पुरुष को जहां परिवार की सांसारिक आवश्यकताएं पूरी करने की जिम्मेदारी दी, वहीं उसने स्त्री को घर-परिवार की बाल-बच्चों की देखभाल का जिम्मा सौंप दिया। 1 तीमुथियुस 5:14 में स्त्री को विवाह करने, बच्चे जनने और घरबार संभालने, की जिम्मेदारी दी गई। तीतुस 2:4, 5 में बुजुर्ग मसीही

स्त्रियों से कहा गया कि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें; और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हों।

किसी महिला को किसी दूसरे द्वारा अपने पति से प्रेम, अपने बच्चों से प्रेम, करना सिखाने की बात अटपती लगेगी। आपके अपने जीवन में क्या आप को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता पड़ी है? कामकाजी पत्नियों और माताओं और टूटते परिवारों के आज के इस युग में क्या स्वाभाविक बंधन होना कठिन है? क्या प्रेम, मुख्य रूप में एक भावनात्मक बात है या इसमें एक मां के अपने परिवार की आवश्यकताओं का ध्यान रखने, निस्वार्थ मन से सेवा करने की उसकी भावना, अपनी परवाह किए बिना निस्वार्थ भावना से ध्यान रखने की उसकी चाह है?

परमेश्वर द्वारा दिए इस कार्य को पूरा करके ही स्त्री उसकी आज्ञा को ईमानदारी से मानकर उसे स्वीकार्य हो सकती है। परिवार और बच्चों की संभाल करने की आज्ञा को किसी भी प्रकार से मनमर्जी से पूरा नहीं किया जा सकता क्योंकि यह स्त्री के लिए छुटकारे की योजना का एक भाग है। इस प्रकार, स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह विश्वास में बनी रहे।

स्त्री के बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाने का दूसरा अर्थ है कि नवजात शिशुओं का पालन-पोषण करने के वर्षों के दौरान उसके अपने आत्मिक जीवन में कई प्रकार की समस्याएं और बाधाएं आएंगी। अपने बच्चों को आराधना के लिए लेकर जाने वाली स्त्री को उनकी आवश्यकताओं की, उनके चिल्लाने की, उनके शोर मचाने की, उनकी भूख की बेहतर समझ होती है। वह जब भी आराधना, प्रार्थना करेगी उसमें बाधा आएगी ही। हो सकता है कि इस प्रकार से पवित्र लोगों के साथ आराधना के लिए जाते हुए उसके जीवन के कई वर्ष बीत जाएं, जिसमें उसे बच्चों के कारण कई बार यह भी ध्यान नहीं रहता कि आराधना में क्या-क्या हुआ था।

घर में ही, उसे अपने बच्चों की रूकावटों और उनकी आवश्यकताओं के कारण प्रतिदिन बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने के लिए समय निकालना कठिन हो सकता है। ऐसे भी दिन हो सकते हैं, जब उसे लगा कि उसकी आत्मा संतुष्ट नहीं हुई है, तब निस्वार्थ होने की इस प्रक्रिया में से गुजरते हुए, अपने हृदय में परमेश्वर और उसके वचन को रखते हुए, सीख सकती है, जिससे बाइबल पढ़ने और बिना रूकावट प्रार्थना के लिए मिनट और घण्टे निकालने के अवसर की कमी लगी होगी।

परमेश्वर को मालूम था कि नवजात और नन्हें बच्चों की लाचारी और उनकी आवश्यकता क्या होगी? उसने इन सब आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्त्री को, परमेश्वर की सृष्टि को विनम्रता, धीरज, कोमल हृदय, महसूस करने वाला मन अटल प्रेम करने की भरपूरी का गुण दिया है। ये सब बातें स्त्री के स्वभाव में ही हैं, जहां तक पुरुष की पहुंच नहीं हो सकती। एक मां के लिए अपने बच्चों का

पालन-पोषण करते हुए प्रतिदिन परमेश्वर के दिए गुणों में भी बढ़ना और अपने बच्चों के साथ और भी प्रेम और धीरज के साथ और बड़ी समझदारी के साथ व्यवहार करना सीखना अनिवार्य है। ऐसा करने से परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए कार्य को पूरा करके वह अपने जीवन को समृद्ध तथा भक्तिपूर्ण बनाती है।

बच्चों के मन और व्यक्तित्व को उनकी माताओं के द्वारा कैसे आकार दिया जाता है? माताओं के मन और व्यक्तित्व को बच्चों द्वारा कैसे आकार दिया जाता है? क्या यह रिश्ता मां और बच्चे दोनों के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना का भाग था?

परन्तु उन कठिन समयों में उसे विश्वासी बने रहना अनिवार्य है। बिना रूकावट के आराधना के बहुत कम अवसरों के बावजूद, बाइबल अध्ययन के लिए समय निकालकर परमेश्वर के वचन की अपनी आत्मिक भूख को न मिटा पाने के बावजूद, इस सच्चाई के बावजूद कि उन वर्षों के दौरान उसका अधिकतर जोर और धारणाएं दो से पांच साल के बच्चों के स्तर के ही रहे होंगे, उसे परमेश्वर के साथ अपने निजी सम्बंध पूरी तनदेही के साथ बनाकर रखना आवश्यक है। मातृत्व की कई चुनौतियों का सामना करते हुए उसे सीखना अनिवार्य हैं-

- परमेश्वर में गहरा विश्वास
- उसकी सम्भाल पर और अधिक निर्भरता
- उसके लिए और जोश भरा प्रेम
- और अधिक पवित्रता और
- निश्चय ही आत्मसंयम के अनुशासन को व्यवहार में लाने का पर्याप्त अवसर।

उसमें ये गुण होने क्यों आवश्यक हैं? क्योंकि यदि उसका अपना संबंध परमेश्वर के साथ नहीं है जिसमें जीवन के महत्वपूर्ण समयों में चुनौतियों का सामना करने के बावजूद उसने केवल परमेश्वर पर भरोसा रखा है, तो वह अपने बच्चों को कैसे सिखा सकती है कि वे परमेश्वर पर भरोसा रखें। परन्तु बच्चों की आत्मिक अगुआई करते और अपनी उन्नति के लिए प्रयास करते हुए वह एक ऐसा मजबूत आत्मिक जन बन जाएगी जो जीवन की सब चुनौतियों का सामना परमेश्वर के सामने समर्पण और विश्वास के साथ कर सकती है।

मूर्तियों से जीवते परमेश्वर की ओर

(थिस्सलु. 1:4, 10)

अर्ल डी एडवर्डस

प्रेरितों 17:1-9 पौलुस द्वारा थिस्सलुनीकियों के यहूदी आराधनालय में तीन

सब्त के दिनों तक, यीशु के मसीह होने को समझाने और प्रमाण देने के लिए दिए गए तर्कों का विवरण है। अनेकों श्रद्धालु यूनानियों तथा प्रमुख महिलाओं ने इस संदेश को सहर्ष स्वीकार किया, परन्तु यहूदी अगुवों ने, द्वेष से भरकर, पौलुस के विरूद्ध उपद्रवी मनुष्यों को भड़काया। उन्होंने यासोन के घर पर हमला किया और यह प्रसिद्ध कथन कहा, ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहां भी आए है (प्रेरितों के काम 17:6ब)। इसके परिणामस्वरूप, पौलुस को थिस्सलुनीके से निष्कासित कर दिया गया, परन्तु ऐसा होने से पहले वह वहां कलीसिया स्थापित कर चुका था।

बाद में थिस्सलुनीके की कलीसिया से अच्छा समाचार मिलने के पश्चात, उसने उन्हें यह पत्र लिखा। तीमुथियुस, जब वह मकिदुनिया से आया, पौलुस के साथ हो लिया संभवत: कुरिन्थुस में और थिससलुनीके की स्थिति के बारे में उस तक अच्छा समाचार लेकर आया। पौलुस अपनी इस पत्री का आरंभ उनके परिवर्तन और मसीह में बढ़ोतरी के लिए आनन्द के साथ करता है।

मूरतों से परमेश्वर की ओर फिर (1:9)। आयत 9 के पहले भाग में, पौलुस ने कहा, 'तुम मूरतों से परमेश्वर कीओर फिरे। प्राचीन संसार में थिस्सलुनीके मूर्तिपूजा से भरा स्थान था। यह आज तक बचा हुआ है और आज के यूनानी इसे सालोनिका कहते हैं। आज भी यह एक फलता-फूलता शहर है, कुछ सीमा तक इस लिए क्योंकि इसकी पहुंच समुद्र तक है। प्रथम शताब्दी में, रोम का एक बहुत प्रमुख मार्ग, एग्रेश्यन मार्ग, थिस्सलुनीकियों से होकर जाता था।

एक पूरे दिन में थिस्सलुनीकियों से ओलम्पस पर्वत, जो यूनानी देवताओं का निवास स्थान माना जाता था, दिखाई देता था। जो लोग ओलमपस पर्वत से अधिक दूरी पर नहीं रहते थे उनके लिए हमारी आशा यही होगी कि वे यूनानी देवताओं के आराधक होंगे। आयत 9 स्पष्ट संकेत देती है कि जिन लोगों ने प्रचार को सुना और सुसमाचार को ग्रहण किया, वे पहले यूनानी देवताओं के आराधक थे।

पौलुस ने उनके लिए कहा, तुम मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे। यह शब्द 'फिरे' उसी मूल शब्द से आया है जिसे प्रेरितों 3:19 में 'परिवर्तित' अनुवाद किया गया है। ये लोग परिवर्तित किए गए थे। परिवर्तन क्या है? यह मुड़ जाना है। फिरने का मूल एवं मध्य बिन्दु परिवर्तन है।

जिस शब्द का अनुवाद 'फिरे' हुआ है वह पश्चाताप अनुवाद किया गया शब्द नहीं है। पश्चाताप शब्द मेटानोइया से आया है और इसका अर्थ होता है मन का बदला जाना। दिवंगत चार्ल्स रॉबर्टसन कहा करते थे, पश्चाताप का अर्थ है नया मन प्राप्त करना। ये दोनों बिलकुल एक ही शब्द तो नहीं है, परन्तु इनके अर्थ लगभग एक समान है। बहुधा ये एक ही आयत में एक साथ प्रयुक्त होते हैं, जैसे प्रेरितों 3:19 में। पौलुस ने कहा, तुम फिर गए। तुमने विपरीत दिशा ले ली। तुमने नया मन प्राप्त कर लिया है, और तुम्हारा जीवन परिवर्तित हो गया है।

जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो (1:9)। पौलुस ने आगे कहा है कि

वे मूर्तियों से इसलिए फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें। जिस परमेश्वर का प्रचार पौलुस करता था वह जीवता और सच्चा परमेश्वर है। ओलम्पस पर्वत के देवता तो निर्जीव और असत्य थे। ज्युस और अन्य देवताओं का कोई यथार्थ नहीं था।

वे 'सेवा' करने के लिए फिरे। हम में से कुछ जन भी फिरे है; परन्तु प्रकट:, हम वास्तव में सेवा करने के लिए नहीं फिरे। इस अध्याय में, इससे एकदम पहले की आयतों में, हम उनकी सेवा के बारे में कुछ देखते हैं। पौलुस ने उनकी सराहना इन शब्दों के साथ की क्योंकि तुम्हारे यहां से प्रभु का वचन सुनाया गया (आयत 8)। वह पहले ही उनके विश्वास के कार्य और प्रेम के परिश्रम के बारे में कह चुका था। यह एक सक्रिय, उद्यमी जीवंत, कलीसिया है जिसकी प्रेरणा विश्वास तथा प्रेम द्वारा कार्य करने से थी। एक प्रचारक ने कहा, कुछ फिरे हैं ताकि, कुछ ना करें नामक चौकी पर बैठकर कम कार्य नामक डंडे को छीलते रहें, साथ ही गाएं कि मैं महिमा के मार्ग पर हूँ। लेकिन थिस्सलुनीकियों के साथ ऐसा नहीं था।

भरोसा विश्वास के केन्द्र में होता है। विश्वास की परिभाषा प्रभु यीशु मसीह में भरोसा और उसकी आज्ञाकारिता है। यदि हमारे जीवन कार्यों से तो भरे हुए हैं, परन्तु हम भरोसा नहीं करते हैं, तो हम विश्वास के एक महत्वपूर्ण भाग का अभाव है।

उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो (1:10)। पौलुस ने यह भी कहा तुम प्रतीक्षा के लिए फिरे। वे मृतकों में से जी उठे यीशु की प्रतीक्षा के लिए फिरे। क्या यह पौलुस की एक विशेषता नहीं है? लेकिन स्मरण रखें कि जब पौलुस ने कहा कि यीशु वापस आ रहा है, तो उसने केवल यह कहकर कि वह वापस आ रहा है अपने श्रोताओं को बिना किसी प्रमाण के नहीं छोड़ दिया। उसने उसके वापस आने का प्रमाण दिया। उसने प्रेरितों 17:30, 31 में कहा, परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है, क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है। प्रमाण कहां है? पौलुस ने आगे कहा, उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है। यही महान आधारभूत सत्य इस बात का आश्वासन है कि वह वापस आ रहा है। उसने खाली कब्र के द्वारा हमें यह आश्वासन दिया है कि वह वापस आएगा। इसलिए मसीही जीवन प्रतीक्षा करने का तो है, परन्तु निष्क्रिय और आलसी प्रकार की प्रतीक्षा नहीं। यह एक जीवित, उद्यमी प्रतीक्षा है।

यही तथ्य कि हम उसके लौटने की बाट जोह रहे हैं एक प्रकार का आत्मिक प्रेरक है जो हमें विश्वासयोग्य कार्य तथा सेवकाई के लिए प्रेरित करता है। प्रतीक्षा करते हुए हम कार्य करते हैं; प्रतीक्षा में हम सेवा करते हैं हम प्रत्येक दिन का स्वागत इस विचार के साथ करते हैं कि यही वह दिन हो सकता है, और यही बोध हमें सेवा के लिए सक्रिय करता है। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से कहा कि मसीह

इतना शीघ्र भी नहीं आने वाला है जितना वे समझ रहे हैं। इसलिए उसके आने की प्रतिक्षा के समय में जो सबसे अच्छा कार्य वे कर सकते हैं वह है अपने कार्यस्थल के कार्यों को करना।

उपसंहार : थिससलुनीके के वासी मसीही कौन बने थे? क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:9, 10)। वे मूर्तियों से फिरे थे। वे जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए फिरे थे। वे यीशु के पुन: आगमन की प्रतीक्षा करने के लिए फिरे थे।

यीशु मसीह की वह अन्तर है, क्योंकि उसके बिना, हम एक आशाहीन अन्त, एक आशाहीन कब्र, एक आशाहीन पुनरुत्थान, एक आशाहीन अनंतकाल का सामना करते हैं; लेकिन उसके साथ हमारे पास स्वर्ग और पृथ्वी दोनों हैं।

नए नियम में मसीह की कलीसिया बाइबल हमें बताती है कि...

हम कौन हैं?

हम मनुष्य हैं, जिसे आरम्भ में परमेश्वर की समानता तथा स्वरूप पर बनाया गया था (उत्पत्ति 1:26, 27)। परमेश्वर ने पहिले मनुष्य, आदम को भूमि की मिट्टी से रचा था और फिर उसके नथनों में जीवन का श्वांस फूंका था, और आदम जीवता प्राणी बन गया था। (उत्पत्ति 257)।

हमारे शरीर मिट्टी से बने हुए हुहै, और मृत्यु पश्चात वे मिट्टी में ही फिर मिल जाते हैं (उत्पत्ति 3:19), परन्तु हमारे पास एक अमर आत्मा है जिसे हमने परमेश्वर से पाया है, और मृत्यु के समय वह परमेश्वर के पास लौट जाएगी। (सभोपदेशक 12:7)।

हम यहाँ क्यों हें?

हम यहाँ इसलिये है क्योंकि परमेश्वर ने हमें बनाया है और उसने हमें एक काम करने का दिया है। पौलुस ने कहा था कि सारी वस्तुए (मनुष्य भी) उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई है। (कुलुस्सियों 1:16)। वह हर एक को उसका काम देता है, (मरकुस 13:34), और जो काम वह हमें करने को देता है उसे पूरा करके हम उसकी महिमा कर सकते हैं। (यूहन्ना 17:4)।

जब हम इस संसार को छोड़ते हैं, तो हम यहाँ से कहाँ चले जाते हैं?

यदि हम परमेश्वर के प्रति विश्वासी बने रहकर उसकी सेवा करते हैं, तो वह हमें अपने साथ स्वर्ग में रहने के लिये वापस बुला लेता है। यदि हमने जीवन में उसकी आज्ञाओं को नहीं माना है, तो हम नरक में अनन्त दण्ड भोगने के लिये चले

जाएंगे।

जब हमारे जीवन का अन्त हो जाएगा, तो केवल दो ही ऐसे स्थान है अनन्तकाल में जिनमें से एक में हम अवश्य जाएंगे। एक जगह है स्वर्ग। यह अच्छी जगह है। वह आनन्द, शांति और प्रसन्नता का स्थान है। स्वर्ग वह जगह है जहां परमेश्वर बास करताहै। (यूहन्ना 14:1-3)।

एक और जगह है, जिसका नाम नरक है। यह बुरा स्थान है। जिन्होंने बुराई की है और अपनी मनमानी करके चले हैं उन सब को इसी जगह स्थान मिलेगा और वहां वे हमेशा का दण्ड पाएंगे। (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

बाइबल मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या पर प्रकाश डालती है, और उसका समाधान भी बताती है

पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन का आरम्भ निष्कंलक होता है। कोई भी मनुष्य पापी उत्पन्न नहीं होता है। जबकि बहुतेरे यह सिखाते हैं, कि इंसान जन्म से ही पापी उत्पन्न होता है, परन्तु बाइबल ऐसी शिक्षा नहीं देती। वास्तव में, बाइबल इसके बिल्कुल विपरीत सिखाती है। बाइबल यह सिखाती है, कि आदम के पाप का परिणाम तो हमारे शरीरों पर पड़ता है (उत्पत्ति) 3:17-19), परन्तु उसका दोष हम पर नहीं आता है। (यहेजकेल 18:20)। हमारे शरीर आदम से निकले हैं, परन्तु आत्मा को हमने परमेश्वर से पाया है। (इब्रानियों 12:9)। क्या परमेश्वर मनुष्य को ऐसी आत्मा देता है जिस पर पहिले ही से किसी दूसरे के पाप का दोष लगा है, और फिर उसे पापरहित लौटने को कहता है? नहीं?

जब एक बालक का जन्म होता है, तो वह परमेश्वर से दूर नहीं होता है। यदि वह अपने जन्म से ही पापी होता है तब तो वह प्रभु से पहिले ही दूर होता है। किन्तु, बालक अपने जन्म से ही पापी नहीं होता है। इसलिये यदि वह बालावस्था में ही मर जाए तो वह स्वर्ग में जाएगा। क्योंकि उसने स्वयं कोई पाप नहीं किया है। (मत्ती 18:3)।

अब यद्यपि एक बालक अपने जन्म से तो निष्पाप होता है, परन्तु वह हमेशा के लिये निष्पाप नहीं रहता है। बालावस्था से पार होकर जब वह बड़ा हो जाता है, तो वह अच्छाई और बुराई के बीच में अन्तर को समझने लगता है। बुराई को जानते हुए भी जब वह बुराई करता है, तो वह पाप करता है। और पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग हो जाता है। (यशायाह 59:1, 2)। परमेश्वर से एक बार अलग हो जाने के बाद मनुष्य स्वयं अपने आप परमेश्वर के पास वापस नहीं आ सकता। उसे सहायता की आवश्यकता है। परमेश्वर मनुष्य को प्यार करता है, और इसीलिये अपने अनुग्रह से उसने मनुष्य को पाप से छुटकारा पाने के लिये एक मार्ग प्रदान किया है। जब मनुष्य को पाप से छुटकारा मिल जाता है, तो वह पहले ही की तरह फिर से परमेश्वर के पास वापस आ जाता है।

पवित्र बाइबल के अनुसार, केवल यीशु मसीह का लोहू ही मनुष्य के पाप को दूर कर सकता है। जब मनुष्य अपने पापों को मसीह के लोहू में धो लेता हैं, तो उसका संबंध फिर से परमेश्वर के साथ स्थापित हो जाता है। जन्म के समय मनुष्य

का संबंध परमेश्वर से रहता है। परन्तु जब मनुष्य बड़ा होकर पाप करता है तो परमेश्वर से उसका संबध टूट जाता है। किन्तु नया जन्म लेकर वह फिर से अपना संबंध परमेश्वर के साथ स्थापित कर सकता है। (यूहन्ना 3:3, 5)।

जब मनुष्य यह जान लेता है कि उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है, और अपने पाप के कारण उससे अलग हो गया है, तो उसे मालूम होना चाहिए कि उसे-

क्षमा मिल सकती है

क्षमा प्राप्त की जा सकती है, परन्तु परमेश्वर की अन्य आशीषों की तरह ही उसकी यह आशीष भी उसकी इच्छा से ही प्राप्त की जा सकती है। प्रभु की क्षमा को प्राप्त करने के लिये उसकी इच्छा को मानना आवश्यक है। (इब्रानियों 5:8)। मनुष्य अपनी मर्जी पर चलकर परमेश्वर से क्षमा प्राप्त नहींकर सकता। (रोमियों 10:1-3)। हमने स्वयं परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया है, और इसलिये उसके पास यह पूरा अधिकार है कि वह हमें बताए कि हमें क्षमा कैसे मिल सकती है। उसने कहा है-

1. यदि कोई मनुष्य उसमें और उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करेगा (इब्रानियों 11:6), और

2. विश्वास उसमें लाकर, अपने पापों से मन फिराएगा, अर्थात् भविष्य में अपने चाल-चलन को बदलकर अपने जीवन को परमेश्वर के वचन की बातों के अनुसार बनाने का निश्चय करेगा, और

3. यदि वह यह अंगीकार करेगा, (रोमियों 10:10), कि मुझे विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और मेरे जीवन का प्रभु तथा स्वामी है, और

4. फिर, यदि वह अपने पापों की क्षमा के लिये पिता और पुत्र और पवित्र-आत्मा के नाम से जल में बपतिस्मा लेगा (मती 28:18-20; प्रेरितों 2:38), तो उसका उद्धार होगा।

ये चार बातें बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं, और उद्धार पाने के लिये इनका पालन करना हर एक इंसान के लिये बड़ा ही आवश्यक है। परमेश्वर की उपरोक्त आज्ञाओं को मानने से मनुष्य क्षमा पाने के योग्य हो जाता है, परन्तु उसे पाप से छुटकारा केवल तभी मिलता है जब वह बपतिस्मा लेने के द्वारा धुल जाता है। (प्रेरितों 22:16)। पानी पापों को नहीं धोता है, पर यीशु मसीह के लोहू से हमारे पाप धुलते हैं। (प्रकाशितवाक्य 1:5)। परन्तु कब?

ध्यान दें - बाइबल की शिक्षानुसार-

मनुष्य जब सुसमाचार में विश्वास करता है, और मसीह के नाम का अंगीकार करता है, और अपने पापों से मन फिराता है, और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये जल में बपतिस्मा लेता है, तो उसका पाप से उद्धार होता है। (मरकुस 16:15, 16)। फिर, जब उसका उद्धार हो जाता है, तो उसी समय प्रभु उसे अपनी कलीसिया (मण्डली) में मिला लेता है। (प्रेरितों 2:47)।

बपतिस्मा लेने का क्या उददेश्य है और इसे लेने से क्या होता है?

बपतिस्मा लेना एक साधारण सा काम है। बपतिस्मा आसानी से लिया जा सकता है। परन्तु बपतिस्मे का महत्व बड़ा ही विशाल है।

बपतिस्मा लेना इसलिये आवश्यक है, क्योंकि बाइबल की शिक्षानुसार-

1. बपतिस्मा उद्धार पाने के लिये आवश्यक है। (मरकुस 16:15, 16)।
2. बपतिस्मा लेने से पापों की क्षमा मिलती है। (प्रेरितों 2:38)।
3. बपतिस्मा मनुष्य को मसीह में मिलाता है। (रोमियों 6:1-4)।
4. बपतिस्मा लेकर मनुष्य मसीह को धारण करता है। (गलतियों 3:27)।
5. बपतिस्मा बचाता है (1 पतरस 3:20, 21)।

मनुष्य का उद्धार करने के लिये यीशु मसीह ने जो कुछ भी किया था, मनुष्य को स्वयं उद्धार पाने के लिये उन्हीं बातों को मानने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ: यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया था, वह एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था, और फिर कभी न मरने के लिये। वह मुर्दों में से जी उठा था। (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। ऐसे ही उद्धार पाने के लिये हम उस उपदेश के सांचे में ढाले जाते है। (रोमियों 6:17)। जैसे कि मसीह पाप के कारण मर गया था, वैसे ही मनुष्य भी अपना मन फिराकर पाप के लिये मर जाता है। फिर, जिस प्रकार से मसीह की देह को एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था, उसी तरह से वह इंसान, जो मन फिराने के द्वारा पाप के लिये मर चुका है, पानी में बपतिस्मा लेने के द्वारा गाड़ा जाता है। और जिस तरह से यीशु कब्र में से जी उठा था, वैसे ही वह मनुष्य जो बपतिस्मा लेता है बपतिस्मे की जल-रूपी-कब्र में से बाहर निकलकर जी उठता है। और जैसे यीशु फिर कभी न मरने के लिए जी उठा था ऐसे ही जो मनुष्य बपतिस्मा लेता है वह भी नए जीवन की सी चाल चलने के लिये जी उठता है। (रोमियों 6:1-4)। सो इस प्रकार उद्धार की सम्पूर्ण योजना को उद्धार पाने वाला व्यक्ति स्वयं प्रभु की आज्ञा मानकर प्रदर्शित करता है।

जब यीशु ने नीकुदेमुस से यूं कहा था कि, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:5)। तो यीशु के कथन का अभिप्राय पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेने से ही था।

सब प्रकार की आत्मिक आशीष मसीह में है (इफिसियों 1:3), और क्योंकि बपतिस्मा मनुष्य को मसीह में शामिल करता है, (गलतियों 3:27), इसलिये मसीह में होने के कारण उसे सब प्रकार की आशीषें मिलती है। सो, मसीह में होना कितनी बड़ी आशीष की बात है।

बपतिस्मा कैसे लें?

अब यदि बपतिस्मा लेने के उद्देश्य को आप अच्छी तरह से समझ गए हैं, तो आपको जल्दी ही बपतिस्मा ले लेना चाहिए।

बपतिस्मा कोई भी आदमी दे सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि कोई प्रचारक या कोई विशेष व्यक्ति ही किसी को बपतिस्मा दे। बपतिस्मा लेने के द्वारा जो लाभ मनुष्य को मिलता है, वह उसे उस व्यक्ति से नहीं प्राप्त होता है जो उसे बपतिस्मा

दे रहा है, परन्तु प्रभु की ओर से मिलता है। किन्तु यदि आप बपतिस्मा ले रहे हैं, तो आप को वह मालूम होना आवश्यक है, कि आप क्या कर रहे हैं। यदि आप को कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता है जो आप को पवित्र शास्त्र की शिक्षा अनुसार बपतिस्मा में गाड़े (कुलुस्सियों 2:12), तो हमारे पते पर लिखकर आप हमें बताएं। हम इस बात का पूरा प्रयत्न करेंगे कि आप को प्रभु की आज्ञानुसार बपतिस्मा दिया जाए। यदि बपतिस्मा लेने के समय अन्य लोग वहां मौजूद हों, तो उन्हें वह अवश्य बताया जाए कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं। क्योंकि हो सकता है कि उनमें कोई ऐसा जन हो जो स्वयं भी प्रभु की आज्ञा को मानन चाहे।

बपतिस्मा लेने की विधि

जल के किसी ऐसे स्थान पर जाइए जहां कम से कम इतना पानी हो जिसमें यदि आप लेट जाएं तो आपका पूरा शरीर जल से ढ़क जाए। बपतिस्मा लेने का तात्पर्य गाड़े जाने से है। (रोमियों 6:4)।

पानी के भीतर, कमर तक पानी में खड़े हो जाएं। फिर जो व्यक्ति आप को बपतिस्मा देने जा रहा है, वह आसानी के साथ आपकी देह को पानी में दफना सकता है।

बपतिस्मा देने वाला व्यक्ति ऐसी स्थिति में होता है कि वह आपकी देह को जल के भीतर गाड़कर उसे तुरन्त जल में से बाहर निकालकर आप को खड़ा कर सकता है। अब आप जल से बाहर निकलकर अपने कपड़े बदल सकते हैं।

नोट-बाइबल की शिक्षानुसार सही बपतिस्मा केवल एक ही बार लिया जाता है। (इफिसियों 4:5)। यदि बपतिस्मा लेने के बाद मनुष्य से कोई पाप हो जाता है तो उस की क्षमा मन फिराकर प्रार्थना करने से मिलती है (प्रेरितों 8:22)। दोबारा बपतिस्मा लेने से नहीं।

शैतान का सामना करो

सूज़ी फ्रैड्रिक

''इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।'' (याकूब 4:7)।

पृथ्वी पर जब हम अपना जीवन बिताते हैं तब अक्सर हमारे सामने अनुचित कार्य करने की परीक्षा आती है। कई बार हम परीक्षा में फंस जाते हैं और ग़लत कार्य कर बैठते हैं। इन्हीं ग़लत कार्यों को कहते हैं, ''पाप''। जब हम पाप करते हैं तब परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं। पाप हमें परमेश्वर से आत्मिक रूप से अलग कर देता है। यदि परमेश्वर से हम अपने पापों के लिये यीशु के द्वारा क्षमा नहीं मांगते तब परमेश्वर हमें अनन्तकाल का दण्ड देगा।

क्या परमेश्वर हमें परीक्षा में डालता है कि हम अनुचित कार्य करें? नहीं। याकूब कहता है, ''जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा

परमेश्वर की ओर से होती है क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा होती है, और न वह किसी की परीक्षा करता है।'' (याकूब 1:13)। जबकि परमेश्वर हमारी परीक्षा नहीं करता तब कौन है, जो हमारी परीक्षा करता है? बाइबल बताती है कि शैतान हमें परीक्षा में फंसाता है। शैतान ने यीशु की परीक्षा ली थी (मत्ती 4:1-11), परन्तु यीशु ने इस परीक्षा के कारण कोई पाप नहीं किया। यीशु ने शैतान का विरोध किया, और शैतान उसे छोड़कर चला गया। प्रेरित पतरस हमें शैतान के विषय में चेतावनी देता है, और हमसे कहता है कि बहुत होशियार रहो क्योंकि, ''तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह (शेर) के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। (1 पतरस 5:8)।

हमें बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि शैतान अपने आपको इस तरह से दिखाता है कि वह हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचायेगा। यीशु ने झूठे भविष्यदूक्ताओं के विषय में कहा था कि वे भूखे भेड़ियों की तरह हैं जो भेड़ों के भेष में आते हैं। (मत्ती 7:5)। प्रेरित पौलूस ने कहा था, ''यह कोई अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमय स्वर्ग दूत का रूप धारण करता है।'' (2 कुरि. 11:14)। शैतान की इन चलाकियों से अपने आपको बचाने के लिये, हमें बड़े ध्यान से अपनी बाइबल का अध्ययन करना चाहिये। जब कोई हमें यह सिखाता है कि आपको परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए ऐसा करना है तो हमें उनकी शिक्षाओं को बाइबल से देखना चाहिए जो कि परमेश्वर द्वारा प्रेरित उसका लिखित वचन है। और मनुष्य के लिये बाइबल में उसकी इच्छा दी गई है। यदि उनकी शिक्षाएं बाइबल से नहीं आई हैं तब हम यह समझ सकते हैं कि यह शिक्षाएं शैतान की ओर से है, परमेश्वर की ओर से नहीं है।

हमें इस बात से भी बड़ा सावधान रहना चाहिए कि शैतान हमें संसार की खुशियां दिखाकर फंसाने का प्रयत्न भी करेगा। इस दशा में हमें यह चुनाव करना है कि क्या हमारा संसार में रहकर थोड़े समय का आनन्द उठाना बहुत महत्त्वपूर्ण है, या अनन्त जीवन की आशिषें महत्त्वपूर्ण है? मूसा हमारे लिये एक बहुत महान उदाहरण है जिसने सही समय पर सही चुनाव किया। बाइबल कहती है, ''विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरोन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना अधिक उत्तम लगा। उसने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्त्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आखें फल पाने की ओर लगी थी।'' (इब्रानियों 11:24-26)।

यदि हम ध्यानपूर्वक परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें तब हम बड़ी ही सरलता से शैतान की चलाकियों तथा परीक्षाओं को पहचान सकते हैं। हमें उसका सामना करना है, यदि हम दृढ़ता से उसका सामना करेंगे तब वह हमारे सामने से भाग जाएगा। (याकूब 4:7)।